WK 10 • 064-301

05 MARCH TUESDAY

APPOINTMENTS

नेतृत्व के सिद्धान्त

(Theories of Leadership)

मनोवैज्ञानिकों ने नेतृत्व के कुछ सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है जिसमें निम्नांकित प्रमुख हैं —

- शीलगुण सिद्धान्त (Trait Theory)
- परिस्थितिक सिद्धान्त (Situational Theory)
- प्रासंगिकता सिद्धान्त या पारस्परिक क्रियात्मक सिद्धान्त (Contingency Theory or Interactional Theory)

शीलगुण सिद्धान्त (Trait Theory)

इस सिद्धान्त को महान - मानव सिद्धान्त (Great-man theory) भी कहा जाता है यह सिद्धान्त इस विश्वास पर आधारित है कि नेता जन्मजात होता है, बनाया नहीं जा सकता। इस सिद्धान्त के अनुसार नेता में कुछ विशेष जन्मजात शीलगुण होते हैं, जो अन्य व्यक्तियों में नहीं होते इसी कारण नेता अपने सभी अनुयायियों के अपेक्षा अधिक प्रभावकारी होता है और समूह का नेता चुन लिया जाता है जैसे — महात्मा गाँधी, नैपोलियन, हिटलर, मार्टिन लूथर आदि नेताओं में कुछ ऐसे ही विशेष शीलगुण थे जिसके कारण वे एक प्रभावकारी नेता के रूप में लोगों के सामने उभर कर आये।

शीलगुण सिद्धान्त की दो प्रमुख महत्वपूर्ण पूर्वकल्पनाएँ हैं, जो निम्नांकित हैं —

(i) पहली पूर्वकल्पना यह है कि नेतृत्व एक सामान्य गुण होता है अर्थात् एक व्यक्ति जो नेता बन जाता है वह सभी परिस्थितियों में नेता बना रहेगा।

(ii) दूसरी पूर्वकल्पना यह है कि नेता में कुछ असाधारण शीलगुण होते हैं, जो उन्हें अपने अनुयायियों से भिन्न करते हैं।

अनेक अध्ययनों का सर्वे कर मन (Mann, 1959) ने यह पाया कि तीन तरह के शीलगुण प्रमुख हैं, जिनकी उपस्थिति से कोई व्यक्ति समूह का नेता बन जाता है — शारीरिक शीलगुण, व्यक्तिगत शीलगुण तथा अर्जित शीलगुण।

NOTES

Scanned with CamScanner

शारीरिक शीलगुणों में व्यक्ति के शारीरिक आकार, शक्ति तथा आयु आदि पर अधिक बल डाला जाता है। व्यक्तिगत शीलगुणों में बुद्धि, आत्मविश्वास, प्रभुत्व, समायोजन, शब्दाडंबर, सामाजिकता, परिश्रमी, दूरदर्शिता, चालकारिता, कल्पना शक्ति आदि प्रमुख हैं। अर्जित शीलगुणों में समूह स्थिति (group status) एक महत्वपूर्ण शीलगुण है। जैसे- उच्च तथा संपन्न परिवारों में जन्म। स्टुगडिल (1964) ने अपने अध्ययन में यह पाया कि जब कुछ प्रयोज्यों को यह विश्वास दिलाया गया कि उनका पद या स्थिति समूह में काफी ऊँचा है, तो वे अपने व्यवहारों में नेतृत्व गुणों को दिखलाना आरंभ कर दिये।

आधुनिक समाज मनोवैज्ञानिकों के बीच इसको व्यापक स्वीकृति के कारण यह सिद्धान्त लोकप्रिय नहीं है। इसकी कुछ कमजोरियाँ निम्नांकित हैं —

→ इस सिद्धान्त द्वारा वैसे सार्वत्रिक शीलगुणों का पता नहीं चलता है, जो सभी नेताओं में समान रूप से पाये जाते हैं। समाज मनोवैज्ञानिकों ने नेतृत्व व्यवहार एवं शीलगुणों के बीच निम्न सहसंबंध पाया है। जिससे पता चलता है कि मात्र शीलगुणों के आधार पर यह नहीं कहा जा सकता है कि कौन समूह का नेता होगा और कौन नहीं हो सकता है।

→ यह सिद्धान्त विश्वसनीय एवं वैध सिद्धान्त नहीं माना जा सकता है, क्योंकि इसके समर्थन में किये गये अध्ययनों में असंगति एवं विरोधाभास अधिक है।

→ इस सिद्धान्त से इस तथ्य की भी व्याख्या नहीं हो पाती है कि कुछ व्यक्ति जिन्हें अपने जीवन के प्रारंभिक अवस्थाओं में अधिक संघर्ष करना पड़ा था जैसे — गाँधी और लेनिन एक महान नेता बन गये परन्तु अधिकांश लोग संघर्ष के बाद भी एक छोटा नेता भी क्यों नहीं बन पाते हैं।

NOTES

निष्कर्षतः इस सिद्धान्त द्वारा न तो नेतृत्व के उद्भव की व्याख्या होती है और न ही उसकी प्रभावशीलता की। अतः आधुनिक समाज मनोवैज्ञानिकों को यह सिद्धान्त पूर्णतः मान्य नहीं है।

Scanned with CamScanner